✺ 8 जून 2014 (18-1-78) की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ✺

✺ ज्ञान-

1] कई बच्चे योगी तू आत्मा की बजाय वियोगी आत्मा बन जाते हैं, जिस कारण मिलन के बजाए जुदाई का अनुभव करते हैं। योगी तू आत्मा सदा बापदादा के दिल तख्तनशीन होती, कभी दूर नहीं होती। वियोगी आत्मायें वियोग द्वारा बापदादा को सामने लाने का प्रयत्न करती हैं। वर्तमान को भूल बीती को याद करती हैं। इस कारण बापदादा कभी प्रत्यक्ष दिखाई देते, कभी पर्दे के अन्दर छिपा हुआ दिखाई देते।

2] जैसे आप लोग भी सेवा स्थान चेन्ज करते हो ना, तो ब्रह्मा बाप ने भी सेवा-स्थान चेन्ज किया है। रूप वही, सेवा वही है। हजार भुजा वाले ब्रह्मा के रूप का वर्तमान समय पार्ट चल रहा है तब तो साकार सृष्टि में इस रूप का गायन और यादगार है। भुजाएं बाप के बिना कर्तव्य नहीं कर सकती। भुजाएं बाप को प्रत्यक्ष करा रही हैं। कराने वाला है तब तो कर रहे हैं।

3] जितना जो बाप के गुणों में, स्थिति में समीप उतना वहाँ स्थान में भी समीप, चाहे घर में, चाहे राज्य में। स्थिति स्थान के समीप लाती है। यही कमाल है जो हरेक समझता है मैं समीप और समीप का अनुभव भी करता है क्योंकि बेहद का बाप है अखुंट है, अखण्ड है इसलिए सभी समीप हो सकते हैं।

4] जैसे स्टूडेन्ट सदा हंसते, खेलते और पढ़ते रहते और कोई बात बुद्धि में विघ्न रूप नहीं बनती, ऐसे ही पढ़ना, पढ़ाना, निर्विघ्न रहना, बाप के साथ उठना, बैठना, खाना-पीना यह है गॉडली स्टूडेण्ट लाइफ।

5] बाप ने आपको ढूँढा या आपने? ढूँढते तो आप भी थे, रास्ता रांग लिया। ढूँढना तो था बाप को, ढूँढा भाईयों को, इसलिए ढूँढ नहीं सके।

6] जितना हर कामना से न्यारे रहेंगे उतना हर कामना सहज पूरी होती जायेगी। खुशी में, प्राप्ति में थकावट नहीं होती।

7] मधुबन में हर कदम में सहज कमाई का अनुभव होता है। मधुबन को वरदान भूमि कहा है। तो वरदान सहज प्राप्ति को हो कहा जाता है। तो मधुबन में आने से ही मेहनत करना समाप्त हो जाती और सहज प्राप्ति होना शुरू हो जाती।

8] पिछला हिसाब सूली है लेकिन बाप की मदद से वह कांटा बन जाता है। परिस्थितियां आनी जरूर हैं क्योंकि सब कुछ यहाँ ही चुक्तू करना है लेकिन बाप की मदद उन्हें कांटा बना देती है, बड़ी बात को छोटा बना देतीहै क्योंकि बड़ा बाप साथ है। इसी निश्चय के आधार से सदा निश्चिंत रहो और ट्रस्टी बन मेरे को तेरे में बदली कर हल्के हो जाओ तो सब बोझ एक सेकण्ड में समाप्त हो जायेंगे।

✺ योग-

1] जिस रूप से जो याद करता है उसी रूप से बापदादा बच्चों के आगे प्रत्यक्ष हो ही जाता है जो योगी तू आत्मा है उसे योग की विधि मिलत जाती है।

2] स्थूल लाइट आंखों से देखते, **रूहानी लाइट** अनुभव से जानेंगे।

3] जो प्रिय वस्तु होती उसका साथ छोड़ना मुश्किल होता है। साथ रहना, योग लगाना मुश्किल नहीं, योग टूटना मुश्किल हो– ऐसे अनुभवी को कहा जाता है गॉडली स्टूडेन्ट लाइफ। जिसको छोड़ना मुश्किल है, तोड़ना मुश्किल है लेकिन साथ रहना मुश्किल नहीं, यही बेस्ट लाइफ है।

4] तपस्वी की तपस्या सिर्फ बैठने के समय नहीं, तपस्या अर्थात् लगन, चलते-फिरते भोजन करते भी लगन है ना। एक की याद में, एक के साथ में भोजन स्वीकार करना याह तपस्या हुई ना।

...2

[2]

✹ धारणा-

1] लहरों से खेलना है, न कि लहरों के वशीभूत हो जाना है। गुणगान करो लेकिन घायल नहीं बनो। बाप देख रहे हैं कि बच्चे मेरे साथी हैं लेकिन बच्चे जुदाई का पर्दा डाल देखते रहते हैं। फिर ढूंढने में समय गँवाते हैं। हाज़िर-हज़ूर को भी छिपा देते। अगर आंख मिचौनी का खेल अच्छा लगता है तो खेल समझकर भले खेलो लेकिन स्वरूप नहीं बनो।

2] अब ऐसी पावरफुल स्टेज बनाओ जिस स्टेज से हर आत्मा को शान्ति, सुख और पवित्रता की तीनों ही लाइटस् अपनी माइट से दे सको।

3] चाहे कहाँ भी शरीर रहे लेकिन मन बाप और सेवा में लगा रहे। खाना, पीना, चलना सब बाप के साथ इसकी ही महिमा है।

4] अगर किसी भी बात में स्वयं के पुरूषार्थ व सेवा में वृद्धि नहीं होती तो जरूर कोई विधि कमी है। चेक करो कि अमृतवेले से लेकर रात तक मन्सा-वाचा-कर्मणा व सम्पर्क विधि-पूर्वक रहा अर्थात् वृद्धि हुई? अगर नहीं तो कारण को सोचकर निवारण करो। फिर दिलशिकस्त नहीं होंगे। अगर विधिपूर्वक जीवन होगी तो वृद्धि अवश्य होगी।

5] जैसे बाप के हर कर्तव्य को आपने चरित्र रूप में देखा ना। तो हर कर्म करते चरित्रवान होकर चलना पड़े, साधारण नहीं।

6] शुभ भावना के स्टॉक द्वारा निगेटिव को पॉजिटिव में परिवर्तन करो।

✹ सेवा-

1] बहनलाने की बातें नहीं सुना रहे हैं। और ही सेवा की स्पीड को अति तीव्रगति देने के लिए सिर्फ स्थान परिवर्तन किया है इसलिए बच्चों को भी बाप समान सेवा की गति को अति तीव्र बनाने में बिज़ी रहना चाहिए। यह है स्नेह का रिटर्न। बाप जानते हैं बच्चों को बाप से अति स्नेह है लेकिन बाप का बच्चों के साथ-साथ सेवा से भी स्नेह है। बाप से स्नेह का प्रत्यक्ष स्वरूप सेवा से स्नेह है। जैसे पल-पल बाबा-बाबा कहते हो वैसे हर पल बाप और सेवा हो तब ही सेवा का कार्य समाप्त होगा और साथ चलेंगे।

2] वर्तमान समय इस रूहानी लाइटस् द्वारा वायुमण्डल परिवर्तन करने की सेवा है। सुना, अब सेवा का क्या रूप होना है। दोनों सेवा अब साथ-साथ हों। माइक और माइट तब सहज सफलतामूर्त बन जायेंगे।

3] सन्तुष्ट रहना और करना। यही वर्तमान समय का स्लोगन है। असन्तुष्ट अर्थात् अप्राप्ति। सन्तुष्ट अर्थात प्राप्ति। सर्व प्राप्ति वाले कभी भी असन्तुष्ट नहीं हो सकते।